१०. पृथ्वी–आकाश

– *श्रीराम परिहार*

'मेरी वसुंधरा' विषय पर अपनी कक्षा में चर्चा करते हुए निबंध लिखिए :–

लेखनीय

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से वसुंधरा शब्द के पर्यायवाची शब्द पूछें । ● धरती को नुकसान पहुँचाने वाले मानव के कार्य संबंधी बातें कहलवाएँ । ● पृथ्वी की विशेषताएँ बताने के लिए कहें । ● पृथ्वी के प्रति कृतज्ञ रहने के लिए प्रेरित करें ।

प्रिय पृथ्वी,

समझ में नहीं आता है कि मैं अपनी कुशल लिखूँ या तुम्हारी कुशल–क्षेम जानूँ । मैं आकाश की संज्ञा धारण कर तुम्हारी ओर–छोर व्यक्त हूँ । मेरे फैलाव से मैं खुद विस्मित हूँ । अनंत उल्का पिंडों को मैं रोज टूटते, गिरते, मिटते देखता हूँ । कभी चाँदनी से नहाई तुम्हारे–मेरे बीच की राह दुविधा बन खिल उठती है । कभी टिमटिमाते तारों की नन्ही हथेलियों से आकांक्षाएँ बुलाती हैं ।

धरती ! तुम बहुत सुंदर हो । सुंदर इसलिए हो कि तुम पर जीवन है । तुम धरित्री हो । तुम जीवन को धारण करती हो । अखिल ब्रह्मांड में शायद जीवन की चहक सिर्फ तुम्हें और तुम्हें मिली है । यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है, इसी से तुम्हारी अलग और सुंदर पहचान है ।

वसुंधरा ! तुम्हारे कितने रंग हैं । एक–एक रंग सृष्टि का अनोखा उल्लास और दर्द समेटे हुए है । वैसे सृष्टि के मूल में तो आनंद ही है लेकिन कहीं–कहीं संधियों में, ओट में दर्द दुबका बैठा है, कहा जाता है, सूर्य रंगों का झरना है । वह प्रकाश पाझर है । यदि यही उसे एकटक देखे तो दृष्टि में काला धब्बा पड़ जाता है । सूर्य से आँख मिलाने की शक्ति की अपरिमितता किसके पास है ? संपाती के बेटों के पास भी नहीं है । सूर्य जब तक तुम्हारे अंगों का सान्निध्य नहीं पा जाता है, उसके रंग खिलते ही नहीं हैं ।

हे रसवंति, करुणा आनंद की भगिनी है । करुणा विहीन आनंद सर्जन नहीं कर सकता । हे भूमि तुम्हारे ऊपर जो हिमालय है वह आनंद की अद्‌भुत और अनुपम उछाल है । उसके हिमाच्छादित शिखर आनंद के उर्ध्वगामी सर्ग हैं । इन्हीं में से देवसरि गंगा करुणा की धारा बनकर फूटती हैं । वे सूखे कोनों और रूखे अधरों तक जाती हैं । प्यासे कंठों की तृप्ति बनती है । सूखे खेतों का संस्कार बनती है । यह करुणा ही बड़ी चीज है जो आनंद को सर्जन का अर्थ देती है ।

हे मानवमाता ! जब कभी सतपुड़ा चोटियों के बीच बसे गावों में चाँदनी

परिचय

जन्म : १६ जनवरी १९५२ फेफरिया, खंडवा (म.प्र.)

परिचय : परिहार जी ललित लेखन में विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपने निबंध, गीत, यात्रा वृत्तांत, लोक साहित्य आदि विविध विधाओं में लेखन किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : आँच अलाव की, ठिठके पल पँखुरी पर, धूप का अवसाद, अँधेरे में उम्मीद आदि (निबंध संग्रह) चौकस रहना है (नवगीत संग्रह),कहे जन सिंगा (लोकसाहित्य) संस्कृति सलिला नर्मदा (यात्रा वृत्तांत)।

गद्‌य संबंधी

पत्र : अपने मित्रों, संबंधियों एवं विविध व्यवसायियों को जब कागज पर लिखकर संदेश/सूचना आदि लेते/देते हैं तो लेखन के उस प्रारूप को पत्र कहते हैं ।

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से परिहार जी ने मानव जाति के लिए पृथ्वी एवं आकाश के योगदान को दर्शाया है, साथ ही इन्हें मानव जनित विनाश से बचाने के लिए भी आगाह किया है ।

झरती है तब रात-रात भर नृत्य की गूँज पहाड़ों पर बरसती है । मैं सतपुड़ा की उन्हीं चोटियों पर बैठा-बैठा तुम्हारे बेटों का यह संस्कार उत्सव देखा करता हूँ । धरती तुझे हजार-हजार विविधताओं का संसार मिला । धरती, वायु मेरा अंश है । शब्द की उत्पत्ति में मेरी सहभागिता है । जल मेरे माध्यम से बनता, बरसता है । आग और पानी का खेल मेरे भीतर भी है लेकिन ये सब मिलकर, तेरे आँगन की मिट्‌टी से जो जीव गढ़ते हैं उसकी लीला पर, मेरी सौ-सौ नीलिमा न्योछावर हैं । तेरे जीवों की श्यामलता के अर्थ बहुत गहरे हैं ।

हे वसुधा ! तेरा यह विपुल भरा भंडार आक्षितिज फैला है । तू जननी है, करुणा की धारा से तू नम है । सुना है कि पुत्र, कुपुत्र हो जाता है पर माता कभी कुमाता नहीं होती । तब हे प्रिय पृथ्वी, मैं पूछना चाहता हूँ यह भूकंप का सर्वनाशी कृत्य क्यों ? संसार का इस तरह विध्वंस ! क्या एक माता की करुणा निःशेष हो गई ? वे हमेशा के लिए सो गए फिर जन्म लेंगे । जीवन फिर रोशन पंखों से उड़ान भरेगा । पृथ्वी ! क्या मन के घाव कभी भर पाएँगे ? ममता के आँसू क्या कभी पोंछे जा सकेंगे ?

मैं उत्तर चाहता हूँ तुम्हारी पाती की प्रतीक्षा है ।

तुम्हारा,
आकाश

हे आकाश !

तुम्हारा पत्र मिला । पत्र क्या है वह तुम्हारे ही चित्त के लालित्य का विस्तार है । तुम्हारे पत्र के शब्द-शब्द में सितारों की रोशनी की नीलिमा दमक रही है और उसी दमक में मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ रही हूँ ।

हे अनंत ! नीलिमा के विस्तार में अपनी पावनता को अक्षुण्ण रखने वाले देव, तुम कितने उदार, कितने पारदर्शी हो ! तुम मेरी विभूति को देखकर कितने प्रसन्न हो इसीलिए शब्द की पावनता और उसकी असीमित मृसण अर्थवत्ता भी तुम्हारे पास है । तुम्हारा मन भी उतना ही बड़ा है जितना तुम्हारा ब्रह्मांडीय फैलाव । इसीलिए तुम्हारे मन की सतरंगी पर मेरी मृदुताई और निठुराई को तुमने बराबर जगह दी है । ऐसा मेरे परिवार के सदस्यों के बीच नहीं होता । तुम मेरे वैभव पर निहाल हो। पर यहाँ तो एक का वैभव, दूसरे की ईर्ष्या से फूलता है। एक की सफलता पर दूसरे के निवाले में कंकर आ जाता है । हे अनंत मेरे ही जायों ने मुझे खोदा । मुझे बाँधा । मुझे पाटा । मुझे लाँघा, मेरा दूध पिया । अन्न खाया । वह सब किया, सो किया, पर मेरे पेट के पानी को भी ये अब निकालकर पी रहे हैं । मेरे रोम-रोम में उगे वृक्षों को काट रहे हैं । मेरी शिराओं-धमनियों-सी नदियों में अपना नरक डाल रहे हैं । मेरी हवा

श्रवणीय

मराठी साहित्यिकार 'कुसुमाग्रज' की कविता 'पृथ्वीचे प्रेमगीत' सुनिए ।

आसपास

'अपने क्षेत्र की पर्यावरण संबंधी समस्याओं और उनके समाधान हेतु संभावित उपायों' पर एक वृत्तांत तैयार कीजिए ।

संभाषणीय

'पृथ्वी की व्यथा' अपने शब्दों में बताओ ।

में धुँआ मिलाया जा रहा है । मेरे ऊपर का अंतरिक्ष जो तुम्हारा ही हिस्सा है और मेरा अर्धांग है उसे भी इंसेट्स, मिसाइल्स, उपग्रह, विचित्र-विचित्र गैसों से पाट दिया है । अब बताओ जीवन की रचना के उपकरण ही साबुत नहीं रहने दिए । यहाँ जीवन ही जीवनरस के खिलाफ खड़ा हो गया है । मेरे बेटे इतने गर्रा गए हैं कि असुरों की आँखों का लालपन उनकी आँखों में तैरने लगा है । आज ये पानी के खिलाफ खड़े हैं । वे हवा के खिलाफ खड़े हैं । वे आग के विरोध में हैं । वे मुझे रौंद रहे हैं । वे तुम्हारे ऊपर गोलियाँ दागने की भंगिमा में आ गए हैं । ओजोन में छेद हो गया है । कुल मिलाकर वे जीवन के हिमायती होकर भी जीवन के खिलाफ खड़े हुए हैं ।

हे शाश्वत नभ ! कोई नहीं जानता यह सृष्टि कितने-कितने युगों की सरिताओं को पार करती आ रही है । निरंतरता ही इसकी विशेषता है और नितनूतनता ही इसकी रमणीयता है ।

हे नीलव्योम ! तुम्हारी ऊँचाई की गहराई में सौर मंडल के कितने-कितने हास-रुदन छुपे हैं । तुम्हारे उल्का पिंडो में मानव के भय और औत्सुक्य दोनों जगते हैं । मेरे ही पखेरुओं के लिए तुम मुक्ति का स्थल और अपनी उड़ान शक्ति की सीमा बने हुए हो। पंख थक जाते हैं लेकिन तुम्हारा विस्तार और गहराई कहीं-कभी खत्म नहीं होते । अनगिनत अदृश्य प्रयोगशालाएँ तुम्हारे आधारहीन आधार में चलती रहती हैं । इनसे हवा बनती है । पानी बनता है आग बनती है । तुमने पत्र में लिखा है कि मुझ पर जीवन है यह विशेष बात है । परंतु यह जीवन भी तुम्हारे द्‌वारा निर्मित हवा-पानी के बिना संभव नहीं है । इसलिए यह गौरव भी मैं तुम्हें ही देती हूँ । वह इसलिए भी कि कोई एक तत्त्व न तो भौतिक वस्तु रच सकता है और न ही उसका रक्षण कर सकता है।

✻ हे लोहित गगन ! तुम्हारे पास अनेक ज्योतिपुंज है । सूर्य प्रकाश का स्रोत है । प्रकाश का झरना है । सूर्य है इसलिए उजियारा है । इस उजियारे से ही जीवन के बाहर-भीतर के ज्ञान-अज्ञान का भी मान-अनुमान होता है । मुझपर रहने वाले सारे प्राणी इसलिए उसकी अभ्यर्थना करते हैं । तुम्हारे पास एक चंदा है । चंद्रमा की चाँदनी ही मेरे शाल्य में दूध भरती है । कपास में उज्ज्वलता भरती है । ज्वार के दानों में मिठास भरती है । कमलिनी में सुगंध भरती है । ✻

हे अंबर ! तुम मुझे भी अपनी नीलाभा के परिधान से वेष्टित किए हुए हो । अतः यह नहीं हो सकता कि मेरा सौंदर्य केवल मेरा अर्जन या निसर्गगत उत्पाद है । तुम्हारे सौर मंडल में ग्रह-नक्षत्र एक-दूसरे के आकर्षण और अस्तित्व पर टिके हैं । उनकी स्थिति ही सहअस्तित्व पर है । आजके दिन यह कितनी सुंदर बात है । लेकिन मेरे पुत्रों ने अपने-अपने देश बना रखे हैं और उनमें से कुछ तो एक-दूसरे को मरने-मारने पर उतारू हैं । ज्ञान पाकर

पठनीय

'बढ़ते तापमान की वैश्विक समस्याओं' के बारे में लेख आदि पढ़िए ।

(१) उचित मिलान कीजिए :

(अ)	(ब)
चंद्रमा	उजियारा
लोहित	झरना
प्रकाश	मिठास
सूर्य	चाँदनी
	गगन

(२) शब्दों के लिंग पहचानिए :

(क) अभ्यर्थना = ...

(ख) झरना = ...

(ग) कमलिनी = ...

(घ) ज्ञान = ...

व्यक्ति विनम्र हुआ था। वह क्षितिजों के पार भी पहुँचा था, जहाँ आँगन के पार कोई द्‌वार खुलता हो। विज्ञान ने उनकी उपलब्धियों की संख्या में और इजाफा किया है।

हे नीरद मालाओं के धारक ! वर्षा से तुम्हारी शोभा है। वर्षा तुम्हारी ह्रदय धारा है। ... तुम्हारी अनुभूति है। इस अनुभूति की अभिव्यक्ति में जब तुम मेघों की कविता लिखते हो और वह कविता नव शब्द-शब्द, बूँद-बूँद मुझपर झरती है तो परम प्रकृति का महाकाव्य रचता है। जो जल तुम श्यामल घनों से बरसाते हो, वही मेरा जीवन रस है। वही फूलों में गंध, वस्तु में रूप, फलों मे रस, मेरी देह पर जाकर स्पर्श और झरनों में शब्द बनकर रुपायित होता है। यही जल मेरे गर्भ मे जाकर मेरे जीवन में संतुलन पैदा करता है। भू गर्भ जल और थल पर स्थित जल की मात्राएँ भी एक तरह का संतुलन कायम करती है। मेरे बेटों ने भू गर्भ जल का इतना दोहन किया, इतना दोहन किया कि मेरे भीतर का संतुलन गड़बड़ा रहा है। वही गड़बड़ाहट कभी भूकंप और कभी ज्वालामुखी बनकर फूटता है।

हे उदारचेता आकाश ! कौन माँ अपनी संतान का अनिष्ट चाहती है? परंतु जब मेरी ही इज्जत पर बेटे वैभव जुटाएँगे, मेरा पानी बोतलों में बंद करके बेचेंगे, मेरी हवा को साँस लेने लायक भी न रहने देंगे तब इन्हें अनुशासित करने के लिए अप्रिय निर्णय लेने ही पड़ते हैं। हे उदारचेता ! ये मेरे मन के भाव हैं, जिनसे तुम अपने उत्तर शायद पा सको। वैसे परम प्रकृति के रहस्यों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर कब कोई दे सका है ?

तुम्हारी,
पृथ्वी

मौलिक सृजन

अन्य ग्रह पर जीवसृष्टि है, आप वहाँ पर अपना घर बसाना चाहते हैं तो किस प्रकार की सुविधाओं की अपेक्षा रखते हैं, लिखिए।

शब्द संसार

पाझर (पुं.सं.) = आधार
लालित्य (भा.सं.) = सुंदरता
नीलिमा (स्त्री.सं.) = नीलापन
अक्षुण्ण (वि.) = समूचा
विभूति (स्त्री.सं.) = वृद्‌धि - समृद्‌धि, ऐश्वर्य
मृदुताई (भा.सं.) = कोमलता
निठुराई (भा.सं.) = निर्दयता
पाटना (क्रि.) = मिट्‌टी डालकर भरना
लाँघना (क्रि.) = पार करना
भंगिमा (स्त्री.सं.) = कुटिलता
हिमायत (स्त्री.अ.) = तरफदारी
शाश्वत (वि.) = स्थायी, नाशरहित
लोहित (वि.) = रक्तवर्ण, लाल
इजाफा (पुं.अ.) = बढ़ती, वृद्‌धि
नीरद (पुं.सं.) = बादल
दोहन (पुं.सं.) = खींचना, दुहना

मुहावरा

निहाल होना = भली-भाँति संतुष्ट और प्रसन्न होना।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल :

चंद्रमा की चाँदनी का परिणाम

(ख) पाठ में इनके लिए प्रयुक्त शब्द हैं :

१. कपास में २. ज्वार के दाने में ३. कमलिनी में

(ग) विशेषताएँ लिखकर प्रवाह तक्ता पूर्ण कीजिए :

१. आकाश

२. पृथ्वी

(२) उचित शब्द लिखकर प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

निमिष → ____ → क्षण → ____ → दिन → ____ → वर्ष

(३) पाठ से पाँच शब्द चुनकर उनके तीन–तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

(४) पाठ में प्रयुक्त पाँच विलोम शब्द जोड़ियाँ लिखिए ।

7U57CR

स्वमत ‘मैं आकाश बोल रहा हूँ’, इसपर अपने विचार लिखिए ।

पाठ से आगे ‘प्राकृतिक संसाधन मानव के लिए वरदान है, इसका उचित उपयोग आवश्यक है’ इसपर अपने विचार लिखिए ।

रचना बोध

....

....

....

भाषा बिंदु

(१) शब्द पहेली से मुहावरे, कहावतें ढूँढ़िए । उनकी सूची बनाइए और अर्थ बताकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

आँखों से	ईंट का	कमर	डूबते	हाथ	अँधेरा	होगा
ओखली में	ऊँट के	तोड़ना	तारा	तले	जवाब	चार
छाती	ओझल	को	जीरा	देना	निकालना	पत्थर से
चिराग	तिनके का	सहारा	होना	आरसी	मुँह में	देना
आँखों का	क्या	मात	कंगन को	सिर	देना	कलेजा
लालच	कचूमर	हाथ	आना	फुलाना	मुँह को	चाँद
जड़ से	बुरी	मलना	उखाड़	बला	लगाना	देना

मुहावरे	कहावतें

(२) निम्न वाक्यों के उद्‌देश्य और विधेय पहचानकर लिखिए :-

(क) हमारे पिता जी अध्यापन के क्षेत्र में कार्यरत थे ।
(ख) पिता जी के पास अथाह खजाना था ।
(ग) हमें स्कूली शिक्षा में संगीत सबसे पहले सिखाई जाती है ।
(घ) गायन में शब्दों का महत्त्व बहुत थोड़ा होता है ।
(च) गायन में अलाप और तानों का महत्त्व होता है ।

उद्‌देश्य	विधेय